॥ जाहिर खबर ॥

श्री जैन संघ से विनती करने में आती है कि महोपाध्याय जी श्री सुमति सागर जी महाराज के सदुपदेश से कोटा-छबड़ा आदि के संघ की द्रव्य सहायता से हिन्दी भाषा में शास्त्र छपाने के लिये यहां "जैन छापाखाना" खोला है, इसमें कल्पसूत्रादि छप कर तैयार हो चुके हैं उनको अवश्य मंगवाइये।

कल्पसूत्र अल्प मूल्य २) दशवैकालिक मूल भावार्थ सहित १) पर्वकथा संग्रह सरल संस्कृत में साधु श्रावक आराधना सहित १)

और उत्तराध्ययन सूत्र, विपाक सूत्र, अंतगड दशा, उववाई आदि छप रहे हैं तथा उपासक दशा, अनुत्तरोववाई, रायपसेणीय, ज्ञाताजी आदि छपने वाले हैं। ५) सहायतार्थ भेजकर स्थाई ग्राहक बनने वालों को पौनी कीमत में सब सूत्र भेजे जायेंगे।

इस छापाखाने में अच्छी सुन्दर और सस्ती छपाई होती है और उसकी बचत ज्ञान भंडार जीवदया आदि परोपकार में लगती है। इसलिये आप अपनी २ छपाई का काम यहां पर अवश्य भेजें।

पत्र व्यवहार का पता—

जैन छापाखाना, कोटा (राजपूताना)

॥ अर्ह ॥

चैत्री पूर्णिमा-देववंदन-विधि।

—विधाता—

गुणाचार्य-गणाधीश-श्रीमद् हरिसागरजी महाराज
चरणारविन्द-मकरंद लम्पट मिलिन्दो

मुनि कवीन्द्रसागर

(प्रकाशयित्री)

साध्वी मुख्या श्रीमती हुलासश्रीजी की विदुषी
शिष्या (साम्प्रत स्वर्गीया) श्रीमती सुव्रत
श्रीजी के सदुपदेश से फलोदी नगर
निवासी श्रीयुत जवाहरमलजी
जोगराजजी श्रावक
दत्तद्रव्य से

श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रन्थमाला
जयपुर

वीराब्द-२४६१ भेट वि० १९९१

श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक जैन प्रेस, कोटा

दो शब्द

इस प्रस्तुत पुस्तकका विषय है " तीर्थाधिराज सिद्धाचल"। उस सर्व प्रसिद्ध महातीर्थ के लिये जैन जनता सदैव भक्ति से नत मस्तक रहा करती है। जैन जनता को उसका परिचय देना मानो अपनी माँ के आगे मामे के गुण को गाना है।

प्रत्येक वर्षकी चैत्री पूर्णिमा के दिन इस महातीर्थ का भाविक भव्यात्मा व्रत पुरस्सर दर्शन वन्दन स्पर्शन पूजन आदि विशेषरूप से करते हैं। कई लोग खास तीर्थ पर जाकर और कई लोग स्व-स्थान में ही तीर्थ वन्दन विधि को करते हैं।

उस विधि में बोलने योग्य चैत्य वन्दन—स्तवन और स्तुतियों का सुचारु संग्रह आज तक कहीं पर भी नहीं छपा था। इसलिये भक्त लोगों को देववन्दन विधि करने को इधर उधर कई पुस्तकें ढूंढनी पडतीं थीं। उनकी असुविधा मिटाने के लिये विदुषी साध्वी श्रेष्ठा श्रीमती विनयश्रीजीने और श्रीमती जतनश्रीजीने देववन्दन विधि को नये ढग से लिखने की प्रेरणा की। उसी प्रेरणा का ही यह फल पुस्तक रूप में पाठकों की सेवामें उपस्थित है। भक्त पाठक इसका रसास्वाद करें।

इस पुस्तक मुद्रण में साध्वी मुख्या श्रीमती हुलासश्रीजीकी विदुषी शिष्या सुव्रतश्रीजी (जो कि पुस्तक प्रकाशन होनेसे पूर्व में ही स्वर्ग वासिनी होगई है) के उपदेश से फलोदी निवासी धर्म प्रेमी श्रावक श्रीयुत जवाहरमलजी जोगराजजी झावकने द्रव्य सहायता दी है एतदर्थ वे धन्यवाद के पात्र है।

* दृष्टि दोष से मुद्रणकर्ता की असावधानी से इसमें कहीं अशुद्धि हुई हो तो पाठक सुधार कर पढ़ें।

भवदीय प्रार्थी—
कवीन्द्रसागर

* नोट-प्रस्तुत पुस्तक में पाठकगण अन्यत्र शुद्धाशुद्धि पत्रक देखें



समर्पण

जोधपुर में अपने विस्तृत और समृद्ध "पारख परिवार को" छोड़ कर "श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज की परम पुनीत छाया में पूज्यपाद गणाधीश्वर गुरुदेव श्री श्री श्री १००८ "श्रीमद् हरिसागरजी" महाराज साहब की परम दया से ७१ वर्ष की वृद्ध अवस्था में भी आदर्श युवावस्था के आत्म बल से सम्यग् दर्शन और सम्यग् ज्ञान के साथ सम्यक् चारित्र रत्न को स्वीकार करके अप्रमत्त भाव से मोक्ष मार्ग में प्रवृत्ति करने वाले चारित्र पर्याय में मुझ से लघु होने पर भी वयोवृद्ध पर्याय को धारण करने वाले, दीक्षित होकर महाव्रतों के साथ आत्म साधना करते हुए विक्रमाब्द १९९० कार्तिक कृष्णा ४ के दिन समाधिमरण को पाकर के [illegible] को धारण करने वाले, मेरे लघु गुरु भ्राता "[illegible] की" स्वर्गीय पुण्यात्मा को उन्हीं के परम प्रिय "तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचलजी की" "चैत्री पूर्णिमा देववन्दन तिथि" सहर्ष सप्रेम समर्पण करता हूँ।

भवदनुरागी—

कवीन्द्र सागर

॥ अर्हं ॥

❀ श्रीमत्सुखसागर भगवद् हरिपूज्य गुरु तीर्थेश्वराय नमः ❀

चैत्री पूर्णिमा-देववन्दन-विधि



॥ दोहा ॥

श्रीमत्सद्गुरु मुख कथित—सुव्रत विधि विस्तार।
चैत्री पूनम पर्व में, आराधो नर नार॥१॥

सौराष्ट्र देश को पावन करने वाले तीर्थाधिराज श्रीसिद्धाचल गिरिराज पर पांचकोटि साधुओं के साथ श्रीआदिनाथ भगवान के प्रथम गणधर श्रीपुण्डरीक स्वामी चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन अनादि काल की परम्परासे आत्म सम्बद्ध घाती-अघाती ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों का अन्त करके अनन्त अव्याबाध मोक्ष को पाए। उसी दिन से यह तीर्थ "श्रीपुण्डरीक गिरि" इस शुभ नाम से प्रसिद्ध हुआ। अनन्त काल की अपेक्षा से अनन्त भव्यात्माओं की आत्मसिद्धि यहाँ [illegible]
के शुभ नाम से [illegible] ऐसे २१इस [illegible]

१०८ सार्थक नाम हैं। इस परम पावन तीर्थ की चैत्री पूनम पर्व के दिन यात्रा करने से अपूर्व लाभ होता है जैसे कहा भी है कि —

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि, तेषां यथात्रया फलम्।
पुण्डरीक गिरेर्यात्रा, तदेकापि तनोत्यहो ॥ १ ॥
चैत्रस्य पूर्णिमास्यातु, यात्रा शत्रुंजयाचले।
स्वर्गापवर्ग सौख्यानि, कुरुते करगाण्यहो ॥ २ ॥

अर्थात्—तीन लोक में जो तीर्थ हैं, उनकी यात्रा करने से जो फल होता है, उस फल को श्रीपुण्डरीक तीर्थाधिराज की एक यात्रा देती है। चैत्र की पूर्णिमा के दिन श्रीशत्रुंजय तीर्थ की यात्रा जो भव्यात्मा करते हैं, वे स्वर्ग और मोक्ष के सुखों को हस्तगत करते हैं. इस तीर्थ में चैत्री पूनम का आराधन करने से-साधन के अभाव में स्वग्राम, नगर, पुर, पाटन आदि स्थानों में श्रीसिद्धाचलजी जिस दिशा में हों उस दिशा के बागों में मैदानों में अथवा किसी पवित्र स्थान में ही यथा साध्य श्रीसिद्धाचलतीर्थ की स्थापना करके श्रीपुण्डरीक स्वामी का ध्यान करने से भव्यजीव-कर्मों का क्षय करके अजरामर-मोक्ष गति को प्राप्त करते हैं। इसलिए भव्यात्माओं को इस पुण्य पर्व-

चैत्री पूर्णिमा के दिन श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज पर अथवा श्रीसिद्धाचलजी की स्थापना करके सुव्रताचरण करना चाहिए।

विधिपूर्वक किया हुआ काम शीघ्रातिशीघ्र फल देनेवाला होता है। इस पर्व की आराधना में इस प्रकार की विधि को करे।

चैत्री पूर्णिमा के दिन प्रातः काल मे सब बाधाओं से मुक्त होकर प्रतिक्रमण करे। प्राभातिक कृत्य कर लेने के बाद स्नानादि से शुद्ध हो, शुद्ध वस्त्र पहन कर अक्षतचॉवल-नारियल रोकडनाणा लेकर पचपरमेष्ठिका ध्यान करता हुआ यतना पूर्वक श्रीगुरुमहाराज के पास जावे। गुरुमहाराज को वन्दन करे। सविनय प्रार्थना करे कि पूज्यवर! चैत्री पूनम पर्वका आराधन करना चाहता हू। कृपा कर आप मुझे व्रत उचराइए. गुरुमहाराज के पास यथाविधि व्रतोचारण करके- चैत्री पूर्णिमा पर्वका माहात्म्य सुने। तदनन्तर श्रीजिन-मन्दिर में जाकर यथाशक्ति द्रव्य-भाव से प्रभुपूजा करे। शुभ मुहूर्त में अपने स्थान से श्रीसिद्धाचल तीर्था-धिराज जिस दिशा में हो उस दिशा में मुख करके प्रणिपात-नमस्कार पूर्वक "नमो तीर्थाधिराजाय"

करे। चावलों की ढेरी बना कर श्रीसिद्धाचलजी की स्थापना करे। उस ढेरी पर श्रीसिद्धाचलजी का पट्ट हो तो बाधे। न हो तो श्रीऋषभदेव भगवान की अथवा श्रीपुण्डरीक स्वामी की प्रतिमा या फोटू स्थापन करे। सिंहासन में भगवान को पधरावे। मुक्ता-फलों से अथवा चावल-अक्षतों से श्रीतीर्थाधिराज को वधावे। केसर, चन्दन आदिक अष्ट द्रव्यों से पूजा करे। तीन प्रदक्षिणा देवे। बाद में श्रीवीतराग प्रतिमा की द्रव्यपूजा इस प्रकार करे।

आगे अष्ट मंगलिक की स्थापना करे। मंगलिक पट्ट न हो तो आठ अक्षतों की ढेरियाँ बनावे। प्रभु-प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करावे। अंग लूहणा करे। प्रभु के चरणांगुष्ठ में दश तिलक करे। दश नवकार गिने। दश फूल या फूलमालाएँ प्रभु को चढ़ावे। दश फल श्रीफल, दाडिम, नारंगी, सेब, सुपारी आदि फल सामने पट्टे पर चढ़ावे। दश साथिये करे। दश दीपक करे। दश जाति के मिष्टान्न नैवेद्य रूप में चढ़ावे। इस प्रकार द्रव्य पूजा करके श्रीसिद्धाचलजी की भावपूजा निमित्त तद्गुणगर्भित स्तुति इस प्रकार करे—

॥ हरि गीत छन्द ॥

कल्याण-कमला-मन्दिर गुण-सुन्दर सुखसागर,
भगवत्प्रभावपर सदा हरिपूज्यमात्मगुणोत्तरम् ।
बहुमोदभार-भर पर परमोदय नतनागर,
सविनय कवीन्द्र सुकीर्तित त नौमि सिद्धगिरीश्वरम् ॥

तदनन्तर खमासमण पूर्वक दूहे बोलता हुआ २१ नमस्कार करे।

॥ दोहा ॥

ॐ अर्हं सुखसिन्धुपद, सिद्धाचल जयकार।
सिद्ध अचल सुख के लिए, वंदू वार वार ॥ १ ॥
विमल द्रव्य अरु भावयुत, क्षेत्र काल जहँ सार।
होते याते विमलगिरि, वंदू वार वार ॥ २ ॥
अंतरंग बहिरंग के, होत शत्रु सहार।
शत्रुंजय सयोगतें, वंदू वार वार ॥ ३ ॥
अविकल साधन सिद्धि में, सिद्धक्षेत्र निर्धार।
निज पद सिद्धि निमित्त से, वंदू वार वार ॥ ४ ॥
भवसागर मन्थन महा, मन्दर गिरि अनुसार।
पर्वतेन्द्र शाश्वत शिवद, वंदू वार वार ॥ ५ ॥
सर्व काम दाता विशद, पुण्यराशि अवतार।
आप अकर्मक हेतुसे, वंदू वार वार ॥ ६ ॥
पृथ्वीपीठ कैलाशवर, पुष्पदन्त आकार।

श्रीपद सुरढ महागिरि, वदूं वार वार ॥ ७ ॥
सिद्धाचल के टिन्यतम, तालध्वज गिरनार
आदि शिखर इकवीस को, वदूं वार वार ॥ ८ ॥
सिद्ध अनन्त हुए जहा, साधन गुण विस्तार
सिद्धराज याते अचल, वदूं वार वार ॥ ९ ॥
तीर्थराज सब तीर्थ मे, सहज सुतारणहार
सुव्रत विधि सेवा करूँ, वदूं वार वार ॥ १० ॥
युगल धर्म धारक प्रभु, पूर्व नवाणु वार
समवसरे गिरिराज पे, वदूं वार वार ॥ ११ ॥
अजित शांति जिनवर रहे, चौमासी श्रीकार
याते पावनपद अचल, वदूं वार वार ॥ १२ ॥
नेमि विना तेवीस जिन, करते परउपकार
पावन गिरिवर को करें, वदूं वार वार ॥ १३ ॥
पुण्डरीक सेवा करे, जो भविजन अविकार
भवजल निधि हेला तिरें, वदूं वार वार ॥ १४ ॥
मुर्गा मिटकर नर हुआ, नृपवर चन्द उदार
सूर्यकुण्ड जल योगतें, वदूं वार वार ॥ १५ ॥
रायण रूख सुसिद्धवड, जहँ महिमा भण्डार
छाया भवमाया हरे, वदूं वार वार ॥ १६ ॥
शत्रुंजी निर्मल जले, त्रिविधि ताप अपहार
कर्म कलक रहे नहीं, वदूं वार वार ॥ १७ ॥

पापी जन भी जो लहे, शत्रुंजय आधार।
हो अपाप परमात्मा, वंदू वार वार ॥ १८ ॥

पांच कोटि मुनि संग में, पुण्डरीक गणधार।
चैत्रीपूनम शिव गये, वंदू वार वार ॥ १९ ॥

नाम थापना द्रव्य अरु, भाव विशेष प्रकार।
निक्षेपा गिरिराज के, वंदू वार वार ॥२०॥

सुखसागर भगवान हरि-पूज्य गिरीश्वर सार।
दिव्य कवीन्द्र सुगीतपद, वंदू वार वार ॥२१॥

इसके बाद दश का देववन्दन करने के लिये "इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसिहियाए मत्थएण वंदामि" कह कर "इच्छा कारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूँ" कह कर बाया घुटना खडा करके मधुर कंठ से चैत्यवन्दन (श्रीसिद्धाचल गुणगर्भित १० गाथा का) करे।

श्रीसिद्धाचल तीर्थराज चैत्यवन्दन

॥ हरि गीत छन्द ॥

युग आदिमें प्रभु आदिने जिसको सनाथ बना दिया,
पूरव नवाणु वार निजपद शरण दे पावन किया।
जिसके अणु अणु में भरा है दिव्य तेज अनुत्तर,

तेजोमय तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥ १ ॥

योगी तथा भोगी जहाँ निज साध्य साधनता धरे,
ह अन्तराय अनन्त उनका अन्त भी जल्दी करे।
संसार मे सर्वोच्चपद पावे अचल सुख निर्भर,
त साध्य-सिद्धिकर सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥२॥

जहँ पुण्यमूर्ति अनन्त साधक साधुओं की भावना,
सन्ताप हर देती विमल फलशालिनी संभावना।
विस्तारती आत्मिक अनन्त सुकान्त गुण रत्नाकर,
त दिव्य-भाव भर सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥३॥

बहती विमल धारा जहाँ शत्रुजयी सुखदा नदी,
जो दूर करती है अनादि कुकर्म की सारी बदी।
है आत्मभूमि मे बहाती शान्त रस-सुख-निर्झर,
विमलाचल तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥४॥

पापी अधम जन भी जहाँ तप-जप करे हो संयमी,
होवे अपाप सुरम्य वे उनके न हो कुछ भी कमी।
वे मुक्तिरमणी रमण सुख भोगे अशेष अनश्वर,
तमहं महा महिमामय प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥५॥

जहँ अन्धकार विकार का लवलेश भी रहता नहीं,
अविवेक पूरित विकलता का अंश भी रहता नहीं।
जहँ हृदय होता है प्रकाशित सच्चिदात्मक भास्वर,
ध्येय मत तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥ ६ ॥

जो है रजोमय आप पर परके रजोगुण को हरे,
है आप खूब कठोर पर जो और को कोमल करे।
आश्चर्यका अवतार तारक जो भवोदधि दुस्तर,
सत्य शिव तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥ ७ ॥
जहँ क्रोध-मान तथैव माया लोभका चलता नहीं,
जहँ पूर्व सुकृतके बिना जाना कभी मिलता नहीं।
जो है स्वयं जड किन्तु हरता है जडत्व सुदुर्धर,
जन-शंकर तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरीश्वरम् ॥ ८ ॥
जहँ रोग शोक वियोग सारे नाश हैं होते सही,
दुर्भाग्य दुःख विशेष कर ढूंढे जहा मिलते नहीं।
सौभाग्य-सुख प्रतिपद जहा पाते सुभव्य मनोहर,
परमोत्तम तमहं सदा प्रणमामि सिद्धगिरी-वरम् ॥ ९ ॥
जहँ पचकोटि सुसाधुगण मे चैत्र पूनम पर्व मे,
श्री पुण्डरीक गणाधिनायक हैं गए अपवर्ग में।
सुखसिन्धु विभु भगवान श्रीहरिपूज्यपद पाए पर,
सविनय कवीन्द्र-सुकीर्तिन त नौमि सिद्धगिरीश्वरम्॥१०॥

इसके बाद "जकिंचि"–"नमुत्थुण"–"जावंति चेइ-आइ"–"जावन्तकेवि साहू"–"नमोऽर्हत्" कह कर श्री शत्रुंजय तीर्थराज गुण गर्भित १० गाथाका स्तवन कहे।

श्रीसिद्धाचल तीर्थराज स्तवन

(तर्ज-केसरिया थासु प्रीत करीरे सचे भाव सु)

सिद्धाचल वन्दो सिद्ध-अचल सुखके लिए ॥ टेर ॥

लौकिक धर्म महा मृगतृष्णा-रूप भयकर भारी।
सिद्धाचल-सेवा लोकोत्तर-धर्म परम हित कारी रे।
सिद्धा० ॥ १ ॥

कृष्णादिक लेश्यासयोजित-मन वच-वपु व्यापारे।
प्रकटित पाप पटल को झटपट-सिद्धाचल सहारे रे।
सिद्धा० ॥ २ ॥

सिंह सर्प शवरादिक प्राणी, हिंसक क्रूर अपारा।
सिद्धाचल दर्शन-दर्शन पा, होते हैं भव पारा रे।
सिद्धा० ॥ ३ ॥

अन्यतीर्थ मे दान शील तप-आदिक जो फल दाता।
सिद्धाचल दर्शन-दर्शनतें, अधिक फले सुखसाता रे।
सिद्धा० ॥ ४ ॥

विकट कोटि सकट कट जावे, शिव सपति घर आवे रे।
सिद्धाचल नामादिक महिमा-श्रावण सुपुण्य प्रभावे रे।
सिद्धा० ॥ ५ ॥

दश दृष्टाते दुर्लभ नरभव-साधन गुण सयोगे।

मिद्धाचल को जो नहीं भेटे-गर्भवास दुःख भोगे रे।
सिद्धा० ॥ ६ ॥
सिद्धाचल पे साधु अनन्ते-सिद्ध परम गति पावे।
तीर्थंकर तीर्थों का राजा-सिद्धाचल को गावे रे।
सिद्धा० ॥ ७ ॥
निज पद पावन करे प्रथमाजिन-पूर्व नवाणुं वारा।
त्रिभुवन मे उत्तम ए तीरथ-सिद्धाचल जयकारा रे।
सिद्धा० ॥ ८ ॥
आदीश्वर के आदिम गणधर-पुण्डरीक गुणधामा।
चैत्री पूनम पच कोटि मुनि-सग वरें शिवरामा रे।
सिद्धा० ॥ ९ ॥
सुखसागर भगवान महोदय, श्रीहरि पूज्य पुनीता।
सविनय दिव्य कवीन्द्र सुगावे, सिद्धाचल गुण गीतारे।
सिद्धा० ॥ १० ॥



स्तवन पढ़ लेने के बाद दोनों हाथ जोड कर मस्तक मे लगा कर "जय वियराय०" कहे खडे हो "अरिहत चेइयाण०" कहे "अन्नत्थ उससिएणं" को पढे बाद मे १० लोगस्सका काउसग्ग करे समय के अभावमे १ लोगस्स का काउसग्ग करे पार कर "नमो अरिहंताणं" कह कर श्री तीर्थाधिराज गुणगर्भित स्तुति कहे।

श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज स्तुति

श्रीसिद्धाचल चैत्री पूनम पुण्डरीक गणधारा जी।
पांच कोटि मुनि संग अचलगति पाए परम उदाराजी॥
स्पर्शन वन्दन कीर्तन भावे जो भविजन कर पावेजी।
हरि कवीन्द्र सुकीरति उनकी पावन प्रति दिन गावेजी॥१॥

इसके बाद १० खमासमण देते हुए—

श्रीसिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर
श्रीपुण्डरीक गणधराय नमः॥

इस प्रकार बोलते हुए १० नमस्कार करे, पांचों स्थानों में यदि अलग २ ध्वजा चढ़ानी हो तो इस पहले १० की पूजा के स्थान में एक ध्वजा चढ़ावे अन्यथा अन्तमें (पांचों पूजा होने के बाद) एक ध्वजा चढ़ावे।

इति प्रथम दशक पूजा-देववन्दन समाप्त



विंशति पूजा विधि

पूर्व लिखित रीति से स्थापित श्री सिद्धाचल तीर्थराज की स्थापना पे प्रतिष्ठित प्रभु प्रतिमा को पचामृत से प्रक्षाल करावे। चरणकमलों में २० तिलक करे। २० नवकार गिने। २० फूल या फूल की मालाएँ प्रभुको चढावे। २० फल सामने रखे हुए पट्ट पर चढावे। २० साथिये करे। २० दीपक प्रकटावे। २० सख्या मे नैवेद्य चढावे। इस प्रकार द्रव्य पूजा के बाद भाव पूजा करने को श्री सिद्धाचल गुणगर्भित २० गाथा का चैत्यवन्दन बायाँ घुटना खडा कर के हाथ जोडकर बोले।



श्रीसिद्धाचल तीर्थराज चैत्यवन्दन

(द्रुत विलम्बित छन्द)

जय अनन्त–गुणाकर, शङ्कर !
जय महोदय–हेतु निरन्तर ।।
जय भयङ्कर दुःख निघर्षण !
जय गिरीश्वर पावन–दर्शन ! ॥ १ ॥

जय सुदुर्गति-पाप-निवारण !
जय महा भव-सागर-तारण ! ।
जय यशोधर मोह तमोहर !
जय महालय भूत-महेश्वर ! ॥ २ ॥
जय महा द्युति तेज-विराजित !
जय भवोदय दुर्गुण वर्जित ! ।
जय विशाल-विभुत्व-समाश्रित !
जय गिरीश्वर योगि सुसेवित ! ॥ ३ ॥
जय निरंजन पुण्य पदाश्रय !
जय सुन्दुजुल सिद्धि-रमालय ! ।
जय निरामय निर्भय निर्मल !
जय गिरीश्वर सिद्ध महाचल ! ॥ ४ ॥
जय शमोत्तम भूमि विशेषित !
जय वरिष्ठ विशिष्ठतया स्थित ! ।
जय महा प्रभ-तीर्थ अनुत्तर !
जय गिरीश्वर शुद्धि-महत्तर ! ॥ ५ ॥
शिवरमा मुख दर्शन के लिए,
अचलता-गुण शिक्षण के लिए ।
सशिव-निश्चल सिद्धगिरीश्वर-
शरण हू मरणादि अगोचर ॥ ६ ॥
अमर के घर की नित नौकरी,

सुरलता सुरधेनु करे खरी ।
अमर सेव्य गिरीश्वर तें कहो–
कित रहे समता उनते अहो ॥ ७ ॥
विकट मोहमहा भट को हरा,
कर निज प्रभुता गुणसे भरा ।
मनु जयध्वज मूर्त किया खड़ा,
गुणी गणेन गिरीश्वर को बड़ा ॥ ८ ॥
न जिसके बहिरात्म अभव्य भी,
पुनित दर्शन पा सकने कभी ।
नयन दर्शन दर्शन ही नहीं,
हृदय दर्शन दर्शन है सही ॥ ९ ॥
सुख-सुदुःख समुत्थित भोग मे,
भवन या वन योग वियोग मे ।
अमम हो विमलाचल जो रहे
सहज वे विमलाचल हो रहे ॥ १० ॥
सुतर हो भव सागर सर्वथा,
विलय-जन्म-जरा मरण व्यथा ।
बल विकाश अनन्त अनन्त हो,
स्मरण मे यदि तीर्थ जयत हो ॥ ११ ॥
सुजन जो विमलाचल में चलें,
विषय चौर नहीं उनको छले ।

कुपथ मे खल के वल होत हैं।
सुपथमें खल निर्बल होत हैं॥ १२॥
गिरि अनेक यहां पर हैं खड़े,
गगन में अति उन्नत हो अड़े।
मिल रही उनमें कुछ भी भला,
पर कहो विमलाचल की कला॥ १३॥
अविरलोन्नत पुण्य प्रकाशके,
सुरित कारक सिद्ध गिरीशके।
निकट मे यदि दोष न नाश हो,
रवि व घूक निदर्शन खास हो॥ १४॥
कुमति जो विमलाचल को तजे,
स्वहित अन्य तथैवच जो भजे।
सुरमणी तज पत्थर वे गहे,
प्रथम के गुण थानक मे रहे॥ १५॥
सुविमलाचल दर्शन ते सही,
कुटिल कर्म कभी रहते नहीं।
किमु मदोद्धत हस्ति समूह भी,
न मृग नाथ विलोक भगे कभी?॥ १६
सफल जन्म घडी दिन है वही,
अतुल भक्ति नदी जिसमें वही।
न वह जन्म घडी दिन भी नहीं,

सु विमलाचल भक्ति जहाँ नहीं ॥ १७ ॥
जय सदागम सिद्ध पढोदय !
जय सुसेवक जन्तु कृताभय !
जय कषाय वनान्तक पावक !
जय कलक निवारक पावक ! ॥ १८ ॥
जय सुखोदधि वर्द्धक चन्द्रमा !
जय जनाम्बुज बोधन अर्यमा !
जय विभो भगवत्व गुणाधिक !
जय भवाम्बुधि तारक नाविक ! ॥ १९ ॥
जय सदा हरि-पूज्य गिरीश्वर !
जय महा महिमा अजरामर !
जय कवीन्द्र सुगीत यशोनिधे !
जय महाजय पुण्य पयोनिधे ! ॥ २० ॥



इस प्रकार चैत्य वन्दन कह कर "जंकिंचि" कहे बाद "नमोत्थुणं" कहे जावतिचेइयाइ "जावत केवि साहू" "नमोऽर्हत्" कह कर बीस गाथा का श्री सिद्धाचल तीर्थराज का स्तवन पढे ।

श्री सिद्ध गिरीश्वर स्तवन

(राग आशावरी तर्ज-भविया श्री जिनबिंब जुहारो)

सिद्धाचल सुखकारी रे सेवो, सिद्धाचल सुखकारी
तीन भुवन जयकारी रे सेवो, सिद्ध-अचल-पद कारी ॥टेर॥
वीर जिनेश्वर शासन नायक, ज्ञायक ज्ञाता दाता।
सिद्धाचल पर समवसरे प्रभु, प्रकटावे सुखसाता रे
सेवो० ॥ १ ॥

प्रभु वन्दन को चौसठ सुरपति, निज निज भक्ते आवे
सिद्धाचल की सुन्दरता लख, दिलमें अति हरखावे
सेवो० ॥ २ ॥

देव देवी सब बातें करते, आपसमें अधिकारी
देखो यह सिद्धाचल मञ्जुल, मोहन महिमा धारी रे
सेवो० ॥ ३ ॥

रंग विरंगी शिखर विराजित, उन्नत गगनाधारी।
सिद्धाचल यह नयन मनोहर, इन्द्र धनुष भ्रमकारी रे
सेवो० ॥ ४ ॥

स्वर्ण उदय अर्बुद गिरि आदिक, अष्टोत्तर शत भारी।
शिखर सुशोभित पावन यह गिरि, नितजावे बलिहारी रे
सेवो० ॥ ५ ॥

सिद्धायतन जिनेश्वर मन्दिर, मूर्त शान्त रसराजे।
तेजो मय जिन मुद्रा लखते, सब दरिद्रता भाजे रे
सेवो० ॥६॥

निज अनन्त उन्नति अभिलाषी, उन्नत गिरि कन्दर मे।
महा महर्षि ध्यान करें नित, परमातम मन्दिर मे रे
सेवो० ॥ ७ ॥

रस कूपी वर रत्न खाण अरु, दिव्यौषध विस्तारा।
दुर्लभ वस्तु पुण्यवान यहां, पावें गुण अनुसारा रे
सेवो० ॥ ८॥

तीरथ भूमि पुण्यप्रभावे, सर्प-मयूर आदिक भी।
जन्म वैर तज मित्र बने यहां, खेले खूब सभी रे
सेवो० ॥ ९॥

शत्रुजयी नागेन्द्री कपिला, यमलादिक सरिताएँ।
चौदह चौदह राज विजय की, विजय पताकाएँ रे
सेवो० ॥ १० ॥

चिहुं दिशि सरस सुकुसुम फलावली, सुन्दरवर वनराजी।
भूख प्यास को दूर करे अरु, नयन ज्योति करे ताजी रे
सेवो० ॥ ११ ॥

अतिशय अनुपम सूर्यादिक यहां, कुण्ड सरोवर सोहे।
रोग शोक सन्ताप हरे सब, दर्शन तें मन मोहे रे
सेवो० ॥ १२ ॥

पापी यम सम अति ही प्रचण्डा, कण्डू नृप गिरी योगे।
पूज्य महर्षि ध्यानी हो ये, अन्तरग सुख भोगे रे
सेवो० ॥ १३॥

इत्यादिक गुण कीर्तन करते, वीर प्रभु पद वन्दे।
समवसरणकी रचना लखने, निज आतम अभिनन्दे रे
सेवो० ॥ १४॥

वीतराग प्रभु वीरजिनेश्वर, बारह परिषद् आगे।
उपदेशे सिद्धाचल महिमा, सुनत भविक अनुरागे रे
सेवो० ॥ १५ ॥

सब तीर्थों का राजा यह गिरी, ऐसा और न कोई।
अन्य तीर्थ दर्शन फल सेती, इह अनन्त फल होई रे
सेवो० ॥ १६ ॥

अस्सी सीत्तर साठ पचासा, बारह योजन माने।
सात हाथ यों छह आरो मे, विस्तारे मम ठाने रे
सेवो० ॥ १७ ॥

साधक सिद्ध अनन्त हुए यहां, क्षेत्रादिक पद भावे
सिद्धाचल यह नाम यथारथ, सिद्ध अचल गुण दावे रे
सेवो० ॥ १८ ॥

सुख सागर भगवान महोदय, वीर प्रभु सुख वाणी।
अमृत सम अनुभवी आराधक, परणे शिव पटराणी रे
सेवो० ॥ १९

श्रीहरिपूज्य सुतीरथराजा सिद्धाचल अभिरामा।
सविनय दिव्य कवीन्द्र सुवन्दित, वन्दूं पूर्ण विरामा रे।
सेवो० ॥ २० ॥

स्तवन पढने के बाद दोनों हाथ जोड कर मस्तक मे लगावें "जय वीयराय" कहे फिर खड़ हो अरिहत चेइयाणं कहे, अन्नत्थ० कह कर काउसग्ग मुद्रा में वीस लोगस्स का काउसग्ग करे। समयाभाव में एक लोगस्स का काउसग्ग करे। पार कर नमोऽर्हत् कह श्रीसिद्धाचलजी की स्तुति कहे।

॥ श्रीसिद्धगिरीश स्तुति ॥

गुण गण ताजा तीरथ राजा साधक सिद्ध बनावेजी।
मजुल महिमा पावन गरिमा मुख से नहीं कही जावे जी ॥
पुण्डरीक पर पुण्डरीक वर सहज समाधि सुभावे जी।
हरिकवीन्द्र सु भोगी योगीन्द्रजु सेवत शिव सुख पावेजी.

बाद मे इच्छामि खमासमणो करते हुए :—

श्रीसिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर
पुण्डरीक गणधराय नमः।

इस पदके उचारण पूर्वक वीस नमस्कार करे। यदि पांचो पूजाओ मे अलग २ ध्वजा चढानी हो तो यहां दूसरी ध्वजा चढावे नहीं तो अन्त मे चढावे।

॥ इति द्वितीया सिद्धगिरि पूजा विधिः पूर्ण ॥

ॐ श्रीत्रिंशत्पूजा विधि ॐ

पूर्व लिखी विधि से स्थापित श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज की स्थापना के ऊपर प्रतिष्ठित प्रभु प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर तीस तिलक करे। तीस नवकार गिने। तीस प्रकार के या तीस फल चढ़ावे। तीस साथिये करें। तीस दीपक करे। तीस सख्या में नैवेद्य चढ़ावे। इस प्रकार द्रव्य पूजा करने के बाद भाव पूजा करे। श्री सिद्धाचल तीर्थराज गुण गर्भित तीस गाथा का चैत्य वदन करे।

॥ श्री सिद्ध गिरीन्द्र चैत्यवन्दन ॥

ॐ दोहा ॐ

श्री सिद्धाचल सकल सुख-सागर सिद्धि निधान।
दु:ख निवारण सिद्धि हित, वन्दू धर बहुमान ॥ १ ॥
श्री सिद्धाचल पर सुजन, जो सीधा चल जाय।
भव वन मे भूले न वह, अजरामर पद पाय ॥ २ ॥
श्री सिद्धाचल शिखर पर, शिवरमणी अधिवास।
गुण थानक पर जो चढ़े, पावे सौख्य विलास ॥ ३ ॥
श्री सिद्धाचल अचल पद, आश्रित जन आधार।
महारि नरेश का, जहा न दण्ड प्रचार ॥ ४ ॥

श्री सिद्धाचल उच्चता, करे नीचता नाश।
कर्म शिकारी का जहां, चले न कोई पाश ॥ ५ ॥
श्री सिद्धाचल जो लखे, आतम अन्तर रूप।
वे जन निर्धन भी यहां, होवे त्रिभुवन भूप ॥ ६ ॥
श्री सिद्धाचल निकट मे, प्रकट महोदय योग।
विकट तमोगुण को हरे, भरे अतट सुख भोग ॥७॥
श्री सिद्धाचल खेत की, महिमा अपरपार।
नित्य घनाधन कर्म विन, देता फल विस्तार ॥ ८ ॥
श्री सिद्धाचल सम यहां, है सिद्धाचल आप।
अनुपमेय उपमा रहित, गुण हैं भरे अमाप ॥ ९ ॥
भीम भवोदधि डूबते-जीवों का आधार।
द्वीप अनुत्तर सुखद यह, सिद्धाचल जयकार ॥१०॥
शान्त अपूर्व गिरीश यह, शत्रुंजय सुविशेष।
भूमि-भोग-नृप वर शिवा-लम्बन रुज न लेश ॥११॥
पुरुषोत्तम श्रीपद नरक-नाशक अभिनव भाव।
पर वृष भेदी है न यह, गिरिवर पुनित प्रभाव ॥१२॥
ब्रह्म-सनातन वरविधि-पावन परम पुराण।
है सिद्धाचल किन्तु भव-लय कारण परमाण ॥१३॥
तिमिर हारि खरकर सुभग, मित्र अनन्त प्रकाश।
यह सिद्धाचल है अहो!, अस्त रहित अवकाश ॥१४॥
राज राज अमृत निधि, सोम कला गुण धाम

औषधीश है सिद्धगिरि, निर्लाञ्छन उद्दाम ॥१८॥
घन आश्रय सुरपथ परम, विशद विष्णुपद खास।
है अनन्त यह तीर्थपति, पर नहीं शुन्याकाश॥१६॥
रसमय जीवन घर महा, मोद हेतु घनरूप।
धूम योनि पर है न यह, सिद्ध गिरीश अनूप॥१७॥
धर्मराज समवर्ति-गुण, महासत्य यमराज।
है सिद्धाचल किन्तु यह, मृत्यु विनाशक साज॥१८॥
धर्मधातु श्रीघन सुगत, महा बोधि भगवान।
है सिद्धाचल पर न है, क्षणिक वाद परधान॥१९॥
श्रीनन्दन प्रद्युम्न पद, कला केलि अभिराम।
है सिद्धाचल विश्व में, पर नहीं मन्मथ काम॥२०॥
क्षमा मूर्ति अचलाकृति, सर्वसहा-समान।
श्री सिद्धाचल है सदा, पर नहीं कुपद विधान॥२१॥
मधर जीवन सर्वतो-मुख घन रस परिणाम।
है सिद्धाचल सर्वगा, पर नहीं जड़ता धाम॥२२॥
रत्नाकर पावन निधि, दिव्य महाशय नव्य।
पर सागर जल निधि नहीं, यह सिद्धाचल भव्य॥२३॥
पावक तमनाशक शुचि, मल-जड़ता-क्षय हेतु।
है न हुताशन सिद्धगिरि, शिव मंदिर वर केतु॥२४॥
जगत्प्राण शीतल महा-बल पवमान अमान।
नूतन सिद्धाचल अहो, अप्रकम्प गुणगान॥२५॥

जय जय सिद्धाचल विमल-गुण जय जय गिरिराज ।।
जय जय अनुपम सिद्धपद-जय त्रिभुवन सिरताज ॥२६॥
जय जय गुण सागर विभो ! जय जय जगदाधार ।।
जय तीर्थेश्वर जय अभय-दाता जय जयकार ! ॥२७॥
जय भगवन् भवहर मदा, जय शत्रुञ्जय-नाथ ।।
जय साधक सिद्धिप्रिय ! जय सुमन विधि दाता ! ॥२८॥
जय सुरगण-नायक-हरि-पूज्य दयामय देव ।।
जय जय मोह महोदधि-शोषक पद्म स्वयमेव ॥२९॥
जय मयिनय सुकवीन्द्र गण-कीर्तित गुणमणिमाल ।
जय सुविजय सिद्धगिरि, शरणागत प्रतिपाल ॥३०॥

चैत्य वन्दन के बाद " जंकिंचि-नमोत्थुण-जावंति चेयाइं-जावंत केवि साहू-नमोऽर्हत् " कहकर श्रीसिद्धाचलजी का तीस गाथा का स्तवन पढ़े।

॥ श्री सिद्धगिरि स्तवन ॥

(राग कव्वाली मर्ज-बोल वन्दे मातरम्)

सिद्धगिरि पर सिद्धि हित, नित ध्यान करना चाहिये ।
आत्मगुण रोधी पुद्गलों-को मिटाना चाहिये ॥ टेर ॥
रूप रस अरु गन्ध आदिक-से रहित है आतमा ।
है अगोचर है अरूपी ज्ञान होना चाहिये ॥

रूप रस अरु गन्ध आदिक, आधिभौतिक भाव मे ।
फंस रही है आतमा, उसको हटानी चाहिये ॥ सिद्ध० २॥
रूप रस अरु गन्ध आदिक, मे हुई है सर्वथा ।
आतमा बहिरातमा, होने न देनी चाहिये ॥ सिद्ध० ३॥
रूप रस अरु गन्ध आदिक, पुद्गलो के भाव है ।
आतमा से भिन्न द्रव्या, को समझना चाहिये ॥ सिद्ध० ४॥
जीव जड के भेद को, जाने बिना मिथ्यात्व है ।
जीव जडको जान उसका, नाश करना चाहिये ॥ सिद्ध०५॥
जीव मे मिथ्यात्व अव्रत, और योग कषाय ही ।
कर्म बन्धन मूल कारण, दूर करने चाहिये ॥ सिद्ध० ६॥
कर्म भी है आठ जो, गुण आठ को है रोकते ।
ज्ञानावरणादि उन्हीं को, रोक देने चाहिये ॥ सिद्ध ०७॥
कर्म के समुदाय थिति रस, आदि चउ विध बन्ध को ।
आतम बलके योग से, होने न देना चाहिये ॥ सिद्ध० ८॥
है अनादि आतमा, से कर्म का सम्बन्ध भी ।
हेम मल वत छूट सकता, है छुडाना चाहिये ॥ सिद्ध० ९॥
कर्म कर्त्ता कर्म फल भोक्ता, स्वय है आतमा ।
मुक्त होती है वही बस, मुक्त करनी चाहिये ॥ सिद्ध १०॥
कर्म फल दाता नहीं है, और कोई दूसरा ।
दूसरे के फेर मे, हर्गिज न पडना चाहिये ॥ सिद्ध० ११॥
कर्म से ससार है, है चार गति के दु:ख भी ।

इसलिये ज्यों हो अकलंक, त्यों वरतना चाहिये ॥सिद्ध०१२॥
आतमा ने ही बनाया, आत्म के संसार को ।
आतमा ही है मिटा सकता, मिटाना चाहिये ॥ सिद्ध०१३॥
ऊँच नीच अनेक भेदों, की यहाँ भरमार है ।
कर्म के सब खेल हैं ये, स्वप्न करने चाहिये ॥सिद्ध०१४॥
जीव-ईश्वर में विषमता, है रही बस कर्म से ।
कर्म का कर नाश समता, प्राप्त करनी चाहिये ॥ सिद्ध०१५॥
सर्वथा संसार भर, रहती विषमता है सदा ।
सत्य समता मुक्ति में है, मुक्ति पानी चाहिये ॥ सिद्ध०१६॥
आतमा ही नित्य और, अनित्य है निज रूप से ।
द्रव्य से पर्याय से, पहचान लेना चाहिये ॥ सिद्ध० १७॥
द्रव्य गुण पर्याय ही हैं, कार्य कारण कल्पना ।
कार्य कारण की समस्या, ध्यान रखनी चाहिये ॥सिद्ध०१८॥
चेतनेतर द्रव्य हैं, धर्मास्तिकायादिक सभी ।
लोक में ममता कभी उनमें, न धरनी चाहिये ॥ सिद्ध०१९॥
आतमा स्वाधीन सुख-भोगी बने ज्यों शीघ्र ही ।
स्वावलम्बन शक्तियाँ, अपनी बढ़ानी चाहिये ॥सिद्ध०२०॥
दूसरों के भूषणों से, जो क्षणिक रुचि है किसी ।
नाश होगी दुःख होगा, त्यागने ये चाहिये ॥सिद्ध० २१॥
आत्म भूषण में प्रभाव, अनुपम विराट रुचि है भरी ।
नाश ना होगी न [illegible] इसकी चाहिये ॥सिद्ध

आत्म गुण साधक विबाधक, साधनों को जानकर ।
आत्म साधन में अपूरव, यत्न करना चाहिये ॥ सिद्ध० २३ ॥
सिद्ध गिरिका शुद्ध पावन, वायु मण्डल दिव्य है ।
आतमाकी स्वस्थता हित, सेवना नित चाहिये ॥सिद्ध२४॥
आत्म हितकारी सदा, चारी सदुपकारी गुरु ।
सेव सविनय भाव सम्यग् बोध पाना चाहिये ॥ सिद्ध०२५॥
धीर हो गम्भीर हो, उर वीतरागी वीर हो ।
ब्रह्मचारी हो सरल हो, शुद्ध रहना चाहिये ॥ सिद्ध० २६ ॥
निर्भय जितेन्द्रिय सुव्रती, एकात्म हो एकान्त में ।
ध्यान के अभ्यास में, आरूढ होना चाहिये ॥ सिद्ध० २७ ॥
आत्म गुण निश्रेणिपे, क्रमसे निजातम को चढ़ा ।
ध्यान शैलेशी करण, प्रत्यक्ष करना चाहिये ॥ सिद्ध० २८ ॥
आत्म गुण घाती-अघाती, कर्म आठों को जला ।
आतमा उज्वल बना कृत-कृत्य होना चाहिये ॥ सिद्ध० २९ ॥
सुख सिन्धु विभु भगवान सुरगण, नाथ हरिसे पूज्य हो ।
सविनय कवीन्द्रों से, सुकीर्तित सिद्धहोना चाहिये
॥ सिद्ध० ३० ॥

स्तवन पढने के बाद दोनों हाथ जोडकर मस्तक में लगा कर "जय वीयराय पढे। खड़े हो "अरिहत चेइयाण" "अन्नत्थ" कहकर काउसग्ग मुद्रामें तीस (समयाभावमें एक) लोगस्सका काउसग्ग करे। पार

कर “नमो अरिहंताणं” कहे फिर नमोऽर्हत् कह कर श्रीसिद्धाचलतीर्थराजकी स्तुति कहे।

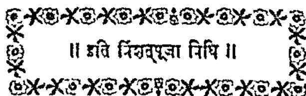
॥ श्री सिद्धाचल तीर्थराज स्तुति ॥

सिद्धाचल पे सिद्धातम हो सिद्धपरम गति पावेजी।
सादि अनन्ते भगे आतम सिद्ध शिला पर ठावेजी॥
यातें अद्भुत अनुपम महिमा सिद्धाचल की सेवाजी।
करते पावो दिव्य कवीन्द्रों से कीर्तित सुख मेवाजी॥१॥

बादमें इच्छामि खमासमणो कहते हुए:-

श्रीसिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर
पुण्डरीक गणधराय नमः।

इस पद के उच्चारण पूर्वक तीन नमस्कार करें। यदि पांचो पूजामें अलग २ ध्वजा चढानी हो तो तीसरी ध्वजा चढाये नहीं तो अन्तमें चढावे।



॥ चत्वारिंशत्पूजाविधि ॥

पूर्व स्थापित श्री सिद्धाचलजी की स्थापना पे प्रतिष्ठित प्रभु प्रतिमा को पचामृत से स्नान करावे। चालीस तिलक करे। चालीस नवकार गिनें। चालीस फल चढ़ावे। चालीस साथिये करे। चालीस दीपक करे। चालीस संख्या मे नैवेद्य चढ़ावे। इस प्रकार द्रव्य पूजा करने के पश्चात भावपूजा करे। श्री सिद्धाचल गुणगर्भित चैत्यवन्दन चालीस गाथा का पढ़े।

श्रीसिद्धाचल तीर्थराज चैत्यवन्दन

॥ दोहा ॥

परमातम-पदवी लहे, पुण्डरीक गणनाथ।
चैत्री पूनम पर्वमे, पचकोटि मुनिसाथ ॥ १ ॥
पुण्डरीक गुणधाम यह, पुण्डरीक गिरिराज।
यातें पावन तीर्थ जय, पुण्डरीक सिरताज ॥ २ ॥
मजुल मन मोहन जहा, पसरे परम सुवास।
पुण्डरीक गिरिराज यह, पुण्डरीक पद खास ॥ ३ ॥
कर्म विकट शठ गजघटा, नाशे अपने आप।
पुण्डरीक गिरिराज है, पुण्डरीक परताप ॥ ४ ॥

मोह महा घनतिमिर भर, झटपट होवे दूर।
पुण्डरीक गिरिराज पर, पुण्डरीक गुण नूर ॥ ५ ॥
नमि-विनमी विद्याधरा, दो कोटी मुनि सग।
शत्रुञ्जय गिरिराज पर, कर कर्मों से जग ॥ ६ ॥
शत्रुञ्जय कर आतमा, वर्ण गन्ध रस हीन।
रूप अरूपी होगए, निजगुण सुख लयलीन ॥ ७ ॥
दश कोटी मुनि सगमें, द्राविड वारिखिल्ल।
गए सिद्धगति सिद्धगिरि, नाश किया भव सल्ल ॥८॥
वैभाविक पर्याय से, विरक्ति हो कर जीव।
स्वाभाविक पर्याय पा, हुए सिद्धगिरि शिव ॥ ९ ॥
साढे आठ कोटि यहा, यदुपति कृष्ण कुमार।
प्रद्युम्नादिक शिव गए, कर भव सागर पार ॥१०॥
पाडव पाच महाबली, विजयी हो ससार।
सिद्धि वधू स्वामी हुए, अजरामर अवतार ॥ ११ ॥
परम जैन धर्मी पर, अन्य लिंग पद धार।
नव नारद पाए यहा, शिव सुख अपरपार ॥ १२ ॥
द्रव्य समर्थक भावका, अन्तर उन्नत भाव।
भावे भव भय नाश हो, यहा यही गुण दाव ॥१३॥
सब उन्माद व रोग के, हेतु धातुका शोष।
करे द्रव्य सलेखना, यहां सदा सुख पोष ॥१

निज गुण रोधक कर्म सह, राग द्वेषका रोध।
यहा भाव सलेखना, करे स्वगुण प्रतिशोध ॥१५॥
भविजन होते हैं यहा, शान्त कान्त शुचि अग।
पुण्यामृत कल्लोलमें, करके स्नान सुरग ॥ १६ ॥
ज्ञानावरण वियोगते, लोकालोक अशेष।
जाने केवल ज्ञान पा, यहा अनन्त विशेष ॥१७॥
यहा दर्शनावरणका, होते नाश अनन्त।
वस्तुगत सामान्यता, दर्शन होत अनन्त ॥१८॥
पुद्गल सगत वेदनी, कुटिल कर्म हो नाश।
अव्याबाध अनन्त सुख, होत यहा सुप्रकाश ॥१९॥
यहा मोहके नाश तें, हो मिथ्यात्व अभाव।
गुण अनन्त सम्यक्त्व मे, प्रकटे रमण सुभाव ॥२०॥
चचल नयन निमेष सम, आयुषका कर अन्त।
पावे थिति भविजन यहा, अक्षय सादि अनन्त ॥२१॥
नाम कर्म इन्द्रिय विषय, रहे नहीं लव लेश।
यहा निरजन सिद्धता, अनुभव होत विशेष ॥२२॥
गौत्र कर्म नाशे यहा, प्रकटे समता रूप।
और अगुरु लघु योगते, सुखमय रूप अनूप ॥२३॥
अन्तराय के अन्तसे, पसरे वीर्य अनन्त।
दानादिक शुभ लब्धियाँ, निज सत्ता विलसत ॥२४॥
निजगुण ठाठ मिटा रहे-आठ कर्म संयोग।

तीर्थराज पे आतमा, उनका करे वियोग ॥ २५ ॥
मित्रा ताराविक विशद, आठ दृष्टि उल्लास ।
योग अवकारण यहा, पावे परम विकाश ॥ २६ ॥
खेद खेप आदिक यहां, आठ दोष हो दूर ।
सहज महोदय हो यहा, परम योग अङ्कूर ॥ २७ ॥
यम नियमादिक आठ विध, योग योग निर्धार ।
यहां आठ विध कर्मका, होता है संहार ॥ २९ ॥
भव गुण आठों कर्मके, बन्ध सुदु:ख निदान ।
उदय और उदीरणा, निज सत्ता सन्धान ॥ १९ ॥
यहां निजातम वीर्य से, गुणठाणा क्रम रूढ ।
भेद करें भव्यातमा, पावें गूढ निगूढ ॥ ३० युग्म ॥
नहीं पांच सस्थान जहा, और न वेद विकार ।
पांच वर्ण दो गध रस, पांच न जहा प्रचार ॥ ३१ ॥
स्पर्श आठ होते नहीं, जहा न होती देह ।
जन्म नहीं न जरा जहा, यही दिव्य गुण गेह ॥ ३२ ॥
सिद्ध अचल शाश्वत सकल, पुनरागमन विहीन ।
चौदराज लोकोन्त थिति, लोकोत्तर सुख पीन ॥ ३३ ॥
पर गुण कारकता नहीं, न जहां ग्राहक शक्ति ।
कर्तृत्वादिक भाव जहँ, निज पदमें ही व्यक्ति ॥ ३४ ॥
उत्पाद व्यय ध्रुवगुणी, आतम द्रव्य अभग ।
गुण पर्यायों में सदा, पूर्ण समाधि सुरग ॥ ३५

अस्ति नास्ति आदिक जहां, विद्यमान सतभंग ।
स्याद्वाद सुख सिन्धु में, भेदाभेद तरंग ॥३६॥
चउगति चक्कर में परे, परम सिद्धगति सार ।
सिद्धाचल चढ़ते उसे, पाते हैं नर नार ॥३७॥
तीर्थराज महीमा अगम, अलख अगोचर रूप ।
त्रिभुवनमें सबसे बड़ा, यही सर्व सिर भूप ॥३८॥
जय सुख सागर पुण्डरीक, जय जय श्री भगवान ।
जय सुर गणनायक हरी, पूज्य महोदय थान ॥३९॥
जय जय श्री आनन्द घन, देव चन्द्र परधाम ।
जिन कवीन्द्र कीर्तित करू, प्रात' काल प्रणाम ॥४०॥

चैत्य वन्दन के बाद "जंकिंचि"—"नमोत्थुणं" "जावंति चेइयाइं"—"जावन्त केवि साहू"—"नमोऽर्हत्" कहकर श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज का चालीस गाथा का स्तवन पढ़ें।

॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थराज स्तवन ॥

(राग गझल तज बिना प्रभु पासके देखे)

परम कल्याण हितकारी, विमल गिरिराज जयकारी ।
विजय जयकीर्तिगुणधारी, विमल गिरिराज जयकारी ॥ टेर ॥
कलपतरु काम कुम्भादि, न इसकी शान रखते हैं ।

समीहित दिव्यफलदाता, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १ ॥

यहा आते हुए जन के, आलौकिक भाव होते हैं।
अनूठा क्षेत्र उपकारी, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २ ॥

जलाता क्रोध अग्नि है, जगत को पर यहां आते।
स्वय जल राख होता है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३ ॥

यडा जो मानका पर्वत, जगत को मानता नीचा।
यही नीचा यहा होता, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ४ ॥

न माया डाकिनीका भी, यहां कुछ जोर चलता है।
हमेशा दूर रहती है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ५ ॥

यहा पर लोभ का सागर, सहज मे सूख जाता है।
महा तेजो मयी मूर्ति, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ६ ॥

कलुषित भावना वाली, कुलेश्या कृष्ण नीलादि।
यहा पर नाश होती हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ७ ॥

सुलेश्या तेज पद्मादि, विमल गुण भावना वाली।
यहां सुविकाश पाती हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ८ ॥

निमित्तोंकी शुभाशुभता, शुभाशुभ काम करती हैं।
जगत के शुभ निमित्तों में, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ९ ॥

अकारण काम कोई भी, यहा होते नहीं देखा।
सुकारज में सुकारण है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १० ॥

सफल काल स्वभावादि, यहा पर पुष्ट होते हैं।
सुकारण कारणों का है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ११ ॥

यहा पर आतमा होती, प्रमाणित सचिदानन्दी।
नयो से और प्रमाणो से, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १२ ॥

अहेतु हेतुवादो से, प्रतिष्ठित निर्विवादी है।
परम गुण प्राप्ति विधि हेतु, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १३ ॥

स्वभाविक व्यजना पर्याय, अनुभव खूब होता है।
यहा पर आतमा का सत, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १४ ॥

निजावस्था रमणता मे, अनन्ते अर्थ पर्याया।
यहा प्रत्यक्ष होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १५ ॥

असत् सत् आदि सत भगे, अरथ पर्याय संवेदन।
यहां होता विशदतर वर, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १६ ॥

असत् सत वा उभयरूपे, त्रिभंगे व्यजना होती।
यहां निज आत्म की अनुपम, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १७ ॥

तपस्वी भव्य गुण योगी, यहां पर शुद्ध ध्यानी हो।
अनन्ते सिद्ध होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम १८ ॥

चराचर धन्य वे जगमे, यहां जो जीव रहते हैं।
भवोदधिपार करते है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० १९ ॥

विराधक और आराधक, यहां पर बन्ध अरु मुक्ति।
सहजमे प्राप्त करते हैं, विमल गिरिराज जयकारी।
॥ परम० २० ॥

यहां यात्रा करें पूजा, चतुर्विध सघ भक्ति जो।
सकुल सुर शिव सुखी होवे, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २१ ॥

नरक मे पापफल भोगे, यहां पर यात्रियों को जो।
सतावे दुःख दे या तो, विमल गिरिराज जयकारी।
॥ परम० २२ ॥

जिनेश्वर तुल्य जिन प्रतिमा, सुपूजाको विमलजल से।
यहाँ करते निमल गुण हो, निमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २३ ॥

यहा चन्दन सुगन्ध पूजा, सकल सन्ताप हर करके।
मनोहर दिव्य पद देवे, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २४ ॥

यहा वर पुष्प पुजो की, सुगन्धी दिव्य मालाएँ।
चढाते सिद्धगति चढते, निमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २५ ॥

दशागी धूप करने से, यहा जन पाप हरते हैं।
अशुभ दुर्गन्ध को टारे, निमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २६ ॥

यहा पर दीप करने से, तिमिर भर नाश होता है।
पुनित परकाश होता है, निमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २७ ॥

सरल शुभ अक्षतो का जो, कर स्वस्तिक यहाँ पर वे।
चतुर्गति धूर देते हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २८ ॥

सरस नैवेद्य ढोते हैं, यहाँ जो पुण्य पावें वे।
अनाहारक परमपदको, निमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० २९ ॥

अनुत्तर फल चढावे जो, यहां फल दिव्य पाकर वे।
करम फल मुक्त होते हैं, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३० ॥

यहां पर आरती करते, निजारति दुःख लय होवे
महोदय प्राप्त होता है, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३१ ॥

सुमगल दीप करने से, अमगल भाव हटते हैं।
परम मगल यहां होवे, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३२ ॥

यहां पर द्रव्य पूजा भी, समुन्नत भाव प्रकटाती।
हरे फिर भाव भव भयको, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३३ ॥

यहां पूजक हुए होवे, सदा स्वाधीन सुख भोगी।
महागुण पूज्यतावाले, विमल गिरिराज जयकारी।
॥ परम० ३४॥

प्रभु श्रीकेवलज्ञानी, प्रमुख तीर्थंकरों की भी।
यहां सिद्धि हुई शाश्वत, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३५ ॥

यहां शुक सेलगादिकने, खपाये आठ कर्मों को।
हुए अकलक आनन्दी, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३६ ॥

यहां रघुवंशि रामादिक, विजेता द्रव्य अरु भावे।

अभयपद पूर्णता पाए, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३७ ॥
निजातम में यहां आते, प्रकटना पूर्ण सुखसागर।
न दु:खका लेश रहता है, विमल गिरिराज जयकारी
। परम० ३८ ॥
यहां जो भक्त आते हैं, सही भगवान होते हैं।
अनिर्वचनीय महिमामय, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ३९ ॥
सुगुरु हरिपूज्य पद पावन, कवीन्द्रों से सुकीर्तित हैं।
सदा वन्दे सदा वन्दे, विमल गिरिराज जयकारी
॥ परम० ४० ॥

स्तवन के बाद "जय वीयराय" "अरिहन्त चेइयाण" "अन्नत्थ" ४० अथवा १ लोगस्स का कायोत्सर्ग करे। काउसग्ग पार कर "नमोऽर्हत्" कहकर स्तुति कहे—

॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थराज स्तुति ॥

त्रिभुवन जन मन वछित पूरण, चिन्तामणि अनुरूपोजी।
तारक गुण धारक दु:ख वारक, सब तीरथ सिर भूपोजी ॥
नय प्रमाण प्रमाणित पावन, सिद्ध-अचल सुखदाताजी।
हरि कवीन्द्र वन्दित नितवन्दो, सिद्धाचल मन भाताजी ॥

बादमें "खमासिमण" देते हुए—
श्रीसिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर
पुण्डरीक गणधराय नमः ।

इस पदके उच्चारण पूर्वक चालीस (४०) नमस्कार करे। यदि पाचों पूजामें अलग २ ध्वजा चढानी हो तो चौथी ध्वजा चढावे अन्यथा नहीं—

॥ इति चतुर्थ पूजा विधिः ॥

॥ पंचाशत्पूजा विधि ॥

पहिले वर्णित विधि से स्थापित श्री पुण्डरीक गिरिराज पर प्रतिष्ठित प्रभु प्रतिमा को पचामृत से स्नान करावें। पचास तिलक करें। पचास नवकार गिनें। पचास फल चढावे। पचास साथिये करें। पचास दीपक प्रकटावे। पचास सख्या में नैवेद्य चढावें। इस प्रकार द्रव्य पूजा के बाद, भाव पूजा के निमित्त श्री तीर्थराज गण गर्भित पचास गाथा का चैत्यवन्दन करे।

॥ श्री शत्रुंजय तीर्थाधिराज चैत्यवंदन

[दोहा]

ॐ अर्ह पद पुण्यतम, त्रिभुवन पावन धाम।
पुण्डरीक गिरिराज है, प्रति दिन करूँ प्रणाम ॥ १ ॥
आगमगुणी तीर्थेश की, महिमा अपरम्पार।
सुरगुरु अथवा शारदा, कहत न पावे पार ॥ २ ॥
लघुमति गति अति भक्तिसे, हूँ प्रेरित मैं आज।
सुध बुध अपनी भूलकर, गाऊ तीरथराज ॥ ३ ॥
तारक गुण धारक यहा, हैं सब तीरथ रूप।
द्रव्य भाव के भेद से, एक अनेक सरूप ॥ ४ ॥
जम्बू दक्षिण भरत में, सोरठ देश विशेष।
तीर्थराज राजे यहा, त्रिकरण नमूँ हमेश ॥ ५ ॥
सिद्धाचल ससार मे, तीर्थ शिरोमणि सार।
दर्शन वन्दन स्पर्शते, भविजन तारण हार ॥ ६ ॥
शत्रुजय श्री पुण्डरीक, विमलाचल अभिराम।
सुरगिरि महागिरि आदि गुण-मय ध्याउँ शुभनाम ॥ ७ ॥
निजघर बैठे भावसे, जो तीरथ शुभ नाम।
जाप करें उनके यहा, नाशे पाप तमाम ॥ ८ ॥
केवलज्ञानी आदि दे, तीर्थंकर अरिहत।
सिद्ध हुए होंगे तथा, काल अनन्तानन्त ॥ ९ ॥

ऋषभदेव स्वामी यहां, पूर्व नवाणु वार।
रायण रूख समोसरे, जिनवर जगदाधार ॥ १० ॥
पुण्डरीक गणधर गुणी, पच कोटि मुनि सग।
चैत्री पूनम में यहां, भोगें सौख्य अभग ॥ ११ ॥
नमि विनमि विद्याधरा, दो कोटि मुनि साथ।
फागण सुदि दशमी हुए, शिव रमणी के नाथ ॥ १२॥
चैत्र वदी चउदश दिने, शत्रुजय आधार।
नमि पुत्री चउसठ लहे, शिव मन्दिर अधिकार ॥ १३ ॥
द्राविड वालीखिल्ल मुनि, दश कोटि अनगार।
कार्त्तिक पूनम मे यहां, पाये पद अविकार ॥ १४ ॥
पांडव पांच तथा यहां, नव नारद ऋषिराज।
प्रद्युम्नादिक यादवा, पाये अविचल राज ॥ १५ ॥
नेमि विना तेवीस जिन, पावन गुण भडार।
समवसरे गिरिराज पे, करने पर–उपकार ॥ १६ ॥
अजित शान्ति जिननाथ दो, रहे यहां चउमास।
आतमगुणउज्वल किये, सहज समाधि विलास ॥१७॥
थावचा सुत सेलगादिक, मुनि केइ कोड।
कठिन कर्म जजीर को, यहां झपट दें तोड ॥ १८ ॥
भरतेश्वर के पाटके, असख्यात भूपाल।
सिद्धाचल पे सहज में, छोडें भव जंजाल ॥ १९ ॥
जालि मयालि प्रमुख मुनि, आतम गुण उद्दाम

प्रकटा कर पावे यहा, परमातम विश्राम ॥ २० ॥
सिद्ध अनन्तों क परम-पुनित शान्त अणुयोग ।
मूर्तरूप यह सिद्ध गिरि, टारे भव दु ख भोग ॥ २१ ॥
सिद्ध रूप की साधना-हित सुन्दर आकार ।
सिद्धायतन यहा करे, त्रिविध ताप अपहार ॥ २२ ।
काल चाल से जीर्ण वे, होते हैं निद्वार ।
तीर्थ भक्त भाविक करें, उनका जीर्णोद्धार ॥ २३ ॥
इस अवसर्पिणी काल में, हुए असख्य उद्धार ।
उनमें भी सोलह बडे, हुए विदित ससार ॥ २४ ॥
ऋषभ देव उपदेश से, भरत भरतपति स्वाम ।
करें प्रथम उद्धार को, पावन पुण्य प्रकाश ॥ २५ ॥
भरत आठवें पाट मे, दण्डवीर्य भूपाल ।
उद्धारक दूजे हुए, जिन शासन उजमाल ॥ २६ ॥
इशानेन्द्र उद्धार को, करें तीसरी बार ।
दर्शन दशन योगते, तीन जगत जयकार ॥ २७ ॥
चौथे सुरलोकेशने, किया चतुर्थोद्धार ।
तीर्थ भक्ति करते भविक, पावे भवोदधि पार ॥ २८ ॥
पचम पचम-देवपति, तीर्थोद्धारक धन्य ।
तीरथ सेवा जो करें, ता सम धन्य न अन्य॥ २९ ॥
भुवनपति-अधिपति करें, छट्ठा जिर्णोद्धार ।
होता जिर्णोद्धार मे, अठ गुणा पुण्य प्रचार ॥ ३० ॥

तीरथ वर उद्धार को, करे सातवीं वार।
सगर चक्रवर्ती जयी, तीरथ भक्त उदार ॥ ३१ ॥
व्यन्तरेन्द्र सुनकर करे, अभिनन्दन जिन पास।
अष्टम वर उद्धार को, आठ करम घन नाश ॥ ३२ ॥
नव में उद्धारक हुए, चन्द्रयशा नरनाथ।
चन्द्रप्रभु के पौत्रवर, शिव रमणी के नाथ ॥ ३३ ॥
निज पितु शांतिजिनेश के, सुनकर शुभ उपदेश।
दशवें उद्धारक हुए, चक्रधरेश विशेष ॥ ३४ ॥
मुनिसुव्रत स्वामी समय, दशरथ सुत श्रीराम।
ग्यारहवें उद्धार को, करें परम गुण धाम ॥ ३५ ॥
निज जननी कुंती कथन, पाण्डु पुत्र सुविचार।
पापनाश कारण किया, बारहवां उद्धार ॥ ३६ ॥
विक्रम संवत एकसौ—आठ बीतने सार।
पोरवाड जावड करे, तेरहवा उद्धार ॥ ३७ ॥
संवत बार तिहुत्तरे, बाहडदे श्रीमाल।
चौदहवां उद्धार कर, वरे विजय वरमाल ॥ ३८ ॥
संवत तेर इकहत्तरे, श्रीयुत समराशाह।
पनरहवां उद्धार कर, पाये पुण्य अथाह ॥ ३९ ॥
पनरह सौ सत्यासी में, दोसी कर्माशाह।
सोलहवां उद्धार कर, पाई शिवपुर राह ॥ ४० ॥
तीर्थोद्धारक धन्य यों, सुजन सुगुण भण्डार।

हुए तथा होंगे सही , अजरामर अविकार ॥ ४१ ॥
तीर्थेश्वर सयोगने , तीर्थेश्वर पद योग ।
त्रिभुवन मे त्रिहुकाल मे , पावे भवि सुख भोग ॥ ४२ ॥
जिन मंदिर प्रतिमा पुनित , शत्रुंजय शुभ भाव ।
करे करावे धन्य वे , पावें परम प्रभाव ॥ ४३ ॥
उत्तर गुण से हीन भी , साधु वेश अधिकार ।
तीर्थ राज में प्रणमते , प्रकटे लाभ अपार ॥ ४४ ॥
शत्रुंजय को भेटते , पापी होत अपाप ।
कार्ती पूनम पर्व में , भाव प्रभाव अमाप ॥ ३५ ॥
जयतु सनातन सिद्ध गिरि ! जयतु विजयदातार ! ।
जयतु पाप सन्तापहर ! जयतु सार-ससार ! ॥४६ ॥
जयतु अधम उद्धारकर ! जय जय पालन हार !
जय अविकारी भाव धर ! जय जय गुण भंडार ! ॥ ४७ ॥
जय सुखसागर जय विभो ! जय भगवन् गिरिराज ! ।
जय योगीश्वर गम्यपद , जय तीरथ सिरताज ! ॥ ४८ ॥
जय सुरगणनायक हरि-पूज्य रुचिर रुचि धार ! ।
जय अध्यात्म विकाश हित , पुष्ट हेतु विस्तार ! ॥४९॥
जय अनन्त अति शान्त गुण ! सिद्ध सिद्धि सुखधाम ! ।
जय "कवीन्द्र" कीर्तित ! सदा , सविनय करू प्रणाम !
॥ ५० ॥

चैत्य वन्दन के बाद "जंकिंचि"- "नमोत्थुण"-

"जावंति चेइयाइं"–जावंत केवि साहू"– "नमोऽर्हत्
कहकर पचास गाथा का स्तवन कहे—

॥ श्री सिद्धाचल तीर्थराज स्तवन ॥

(तर्ज—आपा चालों ए सहेल्यॉ सद् गुरु वादवा रे०)

आतम उन्नति कारण विशेष तीरथ भेटते रे ।
सिद्धाचल पर पाउं सिद्धि कि भव दु ख मेटते रे ॥टेर॥

राग-द्वेष-कषाय वियोग ,
मन-वच-कायापावन योग ,
छःरी पालू सुध उपयोग कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० १ ॥

धन धन सुन्दर-सोरठ-देश ,
राजे जहँ सिद्धाचल एष ,
साधक कारण गुण सविशेष कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २ ॥

पहुँचू पालीताना धाम ,
जहँ जिन-मदिर मन-आराम ,
पाउं दर्शन पद उद्दाम कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ३ ॥

खरतर यति पोमाल प्रधान ,
वन्दू शान्ति नाथ भगवान ,

अनुपम शाश्वत शान्ति विधान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४ ॥

सेत्रू आदीश्वर जगभाण,
मन्दिर दीपे देव विमाण,
वर्ते जहँ आनन्द कल्याण कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ५ ॥

गोडी पारस पारस-रूप,
पूजू प्रणमू भाव अनूप,
प्रकटे सुवरन आतम रूप कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ६ ॥

नरशीनाथा विहित उदार,
मन्दिर चन्द्रप्रभु सुखकार,
प्रति दिन गाउ जय जयकार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ७ ॥

नरशी केशव मन्दिर भाव,
शाश्वत चौमुख पुनित प्रभाव,
चौगति दुःख मिटावन दाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ८ ॥

सेत्रू शासन नायक वीर,
टार जनम मरण की पीर,
पहुचावे जो भवोदधि तीर कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ९ ॥

मोती सुखिया कून सुविशाल ,
मन्दिर पूजू ऋषभ दयाल ,
तजकर और सकल जजाल कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १० ॥

दादावाडी दर्शन धाम ,
पावे तन–मन जहँ विश्राम ,
गाउ दत्त कुशल गुण ग्राम कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ११ ॥

अद्भुत जगकुंवरी जशदेह ,
राजे परतिख श्री जिन गेह ,
पूजू पार्श्वनाथ पद रेह कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १२ ॥

बाबू माधवलाल विशेष ,
मन्दिर राजे सुमति जिनेश ,
नमता न रहे कुमति–कलेश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १३ ॥

तीरथ तलहटी मे खास ,
पसरे अपुरव भावोल्लास ,
देखू अनहद पुण्य प्रकाश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १४ ॥

अनुपम शाश्वत शान्ति निधान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४ ॥

सेवू आदीश्वर जगभाण,
मन्दिर दीपे देव विमाण,
वर्ते जहँ आनन्द कल्याण कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ५ ॥

गोडी पारस पारस-रूप,
पूजू प्रणमू भाव अनूप,
प्रकटे सुवरन आतम रूप कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ६ ॥

नरशीनाथा विहित उदार,
मन्दिर चन्द्राप्रभु सुखकार,
प्रति दिन गाउ जय जयकार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ७ ॥

नरशी केशव मन्दिर भाव,
शाश्वत चौमुख पुनित प्रभाव,
चौगति दु.ख मिटावन दाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ८ ॥

मेरू शासन नायक वीर,
टारे जनम मरण की पीर,
पहूचावे जो भवोदधि तीर कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ९ ॥

मोती सुखिया कृत सुविशाल ,
मन्दिर पूजू ऋषभ दयाल ,
तजकर और सकल जजाल कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १० ॥

दादावाडी दर्शन धाम ,
पावे तन-मन जहँ विशराम ,
गाउ दत्त कुशल गुण ग्राम कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ११ ॥

अद्भुत जशकुवरी जशदेह ,
राजे परतिख श्री जिन गेह ,
पूजू पार्श्वनाथ पद रेह कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १२ ॥

बाबू माधवलाल विशेष ,
मन्दिर राजे सुमति जिनेश ,
नमता न रहे कुमति-कलेश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १३ ॥

तीरथ तलहट्टी मे खास ,
पसरे अपुरब भावोल्लास ,
देखू अनहद पुण्य प्रकाश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १४ ॥

अनुपम शाश्वत शान्ति निधान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४ ॥

सेवू आदीश्वर जगभांण,
मन्दिर दीपे देव विमाण,
वर्ते जहँ आनन्द कल्याण कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ५ ॥

गोंडी पारस पारस-रूप,
पूजू प्रणमू भाव अनूप,
प्रकटे सुवरन आतम रूप कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ६ ॥

नरशीनाथा विरित उदार,
मन्दिर चन्द्राप्रभु सुखकार,
प्रति दिन गाउ जय जयकार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ७ ॥

नरशी केशव मन्दिर भाव,
शाश्वत चौमुख पुनित प्रभाव,
चौगति दुःख मिटावन दाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ८ ॥

सेवू शासन नायक वीर,
टार जनम मरण की पीर,
पहुंचावे जों भवोदधि तीर कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ९ ॥

मोती सुखिया कून सुविशाल ,
मन्दिर पूजू ऋषभ दयाल ,
तजकर और सकल जजाल कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १० ॥

दादावाडी दर्शन धाम ,
पावे तन-मन जहँ विशराम ,
गाउ दत्त कुशल गुण ग्राम कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ११ ॥

अद्भुत जशकुवरी जशदेह ,
राजे परतिख श्री जिन गेह ,
पूजू पार्श्वनाथ पद रेह कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १२ ॥

यात्रू माधवलाल विशेष ,
मन्दिर राजे सुमति जिनेश ,
नमता न रहे कुमति-कलेश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १३ ॥

तीरथ तलहटी मे खास ,
पसरे अपुरब भावोल्लास ,
देखू अनहद पुण्य प्रकाश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १४ ॥

मानू मूर्त शान्त रस रूप,
शान्त रस वर्षाता है धूप,
जय जय सिद्ध गिरि गुण भूप कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १५ ॥

तीर्थंकर गणधर गुणवान् ,
प्रवचन सेवी संघ महान् ,
यहां पर हुए सिद्ध भगवान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १६ ॥

जय जय आदीश्वर अरिहन्त ,
पद युग पूजूं भाव महन्त ,
पूजक पूज्य करण जयवंत कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १७ ॥

धनपति लखमिपति तहुसार ,
उन्नत मन्दिर गगनाधार ,
वन्दू ऋषभ देव अविकार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १८ ॥

ऊंचे चढ़ते ऊंचे भाव ,
छोड़ पुद्गल जन्य विभाव ,
धारू आतम सहज सुभाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० १९ ॥

पहले हुंडे चढ़ खुशहाल ,
भरतेश्वर पद कमल निहाल ,

वन्दू चालू सुखमय चाल कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २० ॥

ऋषभ जिन पूजू नेमिनाथ,
वरदत गणधर पद भी साथ,
सादर सविनय जोडू हाथ कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २१ ॥

पहोंचू हिंगलाज की पाज,
उची रही गगन में राज,
चढ कर तोडू पाप समाज कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २२ ॥

वन्दू कलिकुण्डा प्रभुपास,
पाउ आतम शान्ति विकाश,
प्रकटे अविरल हर्षोल्लास कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २३ ॥

दोडू मानमोड कर होड,
वदू शाश्वत जिन करजोड,
छेडँ कर्म अनादि तोड कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्ध० २४ ॥

आगे चढते शिव सोपान,
परमातम पद सुखद निदान,
झांकी कर पाउ इकतान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २५ ॥

काती पूनम दिन जिनराज,
द्राविड़ वालिखिल्ल मुनिराज,
पाये प्रणमू सविनय आज कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २६ ॥

खरतर वसही वृन्दाकार,
जहँ जिन चैत्य अनेक प्रकार,
दर्शन पाउ धन अवतार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २७ ॥

अन्तर्गत मरुदेवी ट्रूक,
नरशी केशवजी की ट्रूक,
दे प्रभु शान्ति मन्त्र की फूक कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २८ ॥

करते पोरवाड सिरदार,
बन्धु सोम-रूप गुणधार,
चौमुख मन्दिर सूरोद्धार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० २९ ॥

चौमुख आदिनाथ भगवान,
परतिख देवें दर्शन दान,
पूजू अष्ट द्रव्य धर ध्यान कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३० ॥

छींपा वसही भेट्टू नाथ,
मन्दिर अजित शान्ति परभाव,

अजित वर शान्ति परम गुण दाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३१ ॥

पहोंचू खरतर वसही पार ,
पाण्डव पूजू पाच निहार ,
कुन्ती द्रुपद सुता श्रीकार कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ३२ ॥

साकर वसही पारसनाथ ,
पूजू पदम प्रभु जगनाथ ,
मन्दिर सुन्दर तीनों साथ कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३३ ॥

उजम वसही मे सुखकन्द ,
वन्दू नन्दीश्वर सानन्द ,
बावन मन्दिर जिनवर वृन्द कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३४ ॥

हेमा वसही अजित जिनेश ,
चौमुख आदिक पुनित विशेष ,
तिमिर भर नाशक दिव्य दिनेश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३५ ॥

प्रेमा वसी ऋषभ जिन खास ,
पूजू सहसफणा प्रभु पास ,
पूरे जन मन वांछित आश कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३६ ॥

अद्भुत बाबा आदिनाथ,
बाला वसही ऋषभ सनाथ,
सादर वन्दू जोडू हाथ कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३७ ॥

मोतीसा धन धन अवतार,
कुन्तासार की बडी दरार,
भर कर मन्दिर रचें उदार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३८ ॥

मोती वसही ऋषभ जिणद,
माता मरुदेवी को नन्द,
दर्शन किया हरे दुख दद कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३९ ॥

विमल वसही अन्तर भाव,
प्रकटे शान्ति शान्त-सम्भाव,
माता चकेसरी परभाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४० ॥

चॅवरी नेमिनाथ की पास,
पूजू धर्माझरा प्रभु पास,
सूरजकुण्ड सुपुण्य विलास कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४१ ॥

दर्शन करते पहोंचू ठेठ,

भेटू ऋषभ देव जगशेठ,
पूजू पद कज रायण हेठ कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४२ ॥

वन्दूं विहरमान भगवान,
अष्टापद तीरथ परधान,
श्रीसम्मेतशिखर गुणवान कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४३ ॥

पूजूं पुण्डरीक गणधार,
आदु ऋषभनाथ दरबार,
गाउं जय जय जिन जयकार कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४४ ॥

मानुं जन्म सफल मैं आज,
भेटया तीन भुवन सिरताज,
मेरे सीधे वछित काज कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४५ ॥

प्रभुवर ! माफ करो मुझपाप,
मेरे तुम ही हो माँ बाप,
मेरा हरो त्रिविध सन्ताप कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४६ ॥

प्रभो ! तुम पद से घेटीपाज,
पावन होगई भवजल पाज,

अद्भुत बाबा आदिनाथ,
बाला वसही ऋषभ सनाथ,
सादर वन्दू जोड़ू हाथ कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३७ ॥

मोतीसा धन धन अवतार,
कुन्तासार की बड़ी दरार,
भर कर मन्दिर रचें उदार कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३८ ॥

मोती वसही ऋषभ जिणंद,
माता मरुदेवी को नन्द,
दर्शन किया हरे दुख दंद कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ३९ ॥

विमल वसही अन्तर भाव,
प्रकटे शान्ति शान्त-समभाव,
माता चकेसरी परभाव कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४० ॥

चँवरी नेमिनाथ की पास,
पूजू धमीझरा प्रभु पास,
सूरजकुण्ड सुपुण्य विलास कि तीरथ भेटते रे
॥ सिद्धा० ४१ ॥

दर्शन करते पहोंचू ठेठ,

भेटूं ऋषभ देव जगशेठ,
पूजूं पद कज रायण हेठ कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४२ ॥

वन्दूं विहरमान भगवान,
अष्टापद तीरथ परधान,
श्रीसम्मेतशिखर गुणवान कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४३ ॥

पूजूं पुण्डरीक गणधार,
आयु ऋषभनाथ दरबार,
गाउं जय जय जिन जयकार कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४४ ॥

मानुं जन्म सफल मैं आज,
भेट्या तीन भुवन सिरताज,
मेरे सीधे वंछित काज कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४५ ॥

प्रभुवर ! माफ करो मुझपाप,
मेरे तुम ही हो माँ बाप,
मेरा हरो त्रिविध सन्ताप कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४६ ॥

प्रभो ! तुम पद से घेटीपाज,
पावन होगई भवजल पाज,

मुझ को तारो गरिबनिवाज कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४७ ॥

तुम पद प्रक्षाल्न जल धार,
योगे शत्रुजी सुखकार,
तारे परम तीर्थ गुण धार कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४८ ॥

स्वामी आप निकट अभिराम,
राजे सिद्ध सिद्ध वटनाम,
भव-दव दुखियों का विश्राम कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ४९ ॥

जय जय नाभिनन्द जिनचन्द,
जय जय दिनकर तेज अमन्द,
जय जय सेवित सुरनर वृन्द कि तीरथ भेटते रे
सिद्धा० ५० ॥

(कलश)

जात्रा करी चैत्री पुनम दिन धन्य जीवन होगया,
सुखसिन्धु मय भगवान मय हरिपूज्य पदमय होगया
तीर्थाधिराज सुआज भेटे सुविधि—सुव्रत भाव से,
रूपचन्द्र कीर्तित होगया मैं साधु पुण्यप्रभाव से

स्तवन के बाद हाथ जोड़ कर मस्तक मे लगा कर "जय वीयराय" कहे, खड़े होकर "अरिहन्त चेइयाणं- अन्नत्थ" कह कर पचास लोगस्सका अथवा समय के अभाव मे एक लोगस्सका काउस्सग करे। पार कर "नमोऽर्हत्" कह कर एक थुई कहे।

श्रीसिद्धाचल तीर्थराज स्तुति।

सुर "गणनायक हरि-"पूजित पद सिद्धाचल अभिरामीजी
सविनय दिव्य "कवीन्द्र"सुवन्दित तीन भुवन सिरनामीजी
चैत्री पूनम भावे भविजन सेवो तीरथ- राजाजी,
सुजन-विधि सेवासे पावो सुखमय मेवा ताजा जी ॥१॥

बाद मे "इच्छामि खमासमणो" कहते हुए—
श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर
पुण्डरीक गणधराय नमः ॥

इस पद के उच्चारण पूर्वक पचास नमस्कार करें। यदि पाचों पूजा मे अलग अलग ध्वजा चढाई हो तो यहा एक ध्वजा चढावे। नहीं तो पाचो पूजा के निमित्त यह पूर्ण होने पर एक ध्वजा चढावे।



सुगृहीत नामधेय-सुप्रशस्त भागधेय-चारित्र
चूडामणि सुविहिताग्रणी—गुणाचार्यवर्य-
मदार्य सेवित पादारविन्द — स्मारित-
पूर्व सूरीन्द्रवृन्द गणाधीश्वर श्री श्री
श्री १००८ श्रीमद् हरिसागर सद्-
गुरूणामन्तेवासि कवींद्र सागर
विहितोऽय समासो विधि. ॥

श्री शत्रुञ्जय ऋषभजिन चैत्यवंदनम्

भृत्याश्रितो भोगि-गणैरुपास्यः,
कलाभरं यः कलयाञ्चकार ।
महाव्रती कामजयी महेशो,
वृषध्वजोऽसौ जयताच्छिवेशः ॥ १ ॥
कलङ्क-पङ्कापहरा सुवर्णा,
या भू—र्भुवः-स्वर्गमना रसाढ्या ।
यस्मात्त्रिवेणी त्रिपदी मिषेण,
विविभ्रमाऽभूज्जयताज्जिनेनः ॥ २ ॥
जीर्णः कुजन्मापि स एष "राजा-
दनो"ऽमलाद्रौ यदुपाश्रयेण ।
वर्नोर्ति सेव्यो विबुधैरिदानीं
सुमङ्गलेशो जयतात् स शम्भु ॥ ३ ॥
जडाकुलाहो ! तत वि-भ्रमापि ,
यदाश्रितासा ननु निम्नगापि ।
शत्रुञ्जयी पूज्यतमा जगत्यां
जाता स जीयादनिशं स्वयम्भूः ॥
यस्य प्रसत्ते रुपलात्मकोऽपि ,
ससेवनीयः सुमनो-मुनीशैः ।
महीभृतां मौलिमणिर्नगेन्द्रः .

शत्रुञ्जयोऽय जयताज्जिनेन्द्र ॥ ५ ॥
सुखाम्बुराशे परिवृद्धिहेतु-
महोदयानन्तविराजिकेतु ।
सन्तापसन्दोह-निवारणेन्दु-
र्युगादिनाथो भगवान् स जीयात् ॥ ६ ॥
विनम्र- भावाद्भुत-भक्ति-युक्त-
स्तुति क्रियाचद्धरिपूज्यमूर्ति ।
"कवीन्द्र" सकीर्तित-सत्यकीर्ति-
र्जीयाद्विभु सुवन सिद्धवृत्ति ॥ ७ ॥

श्रीसिद्धाचल तीर्थेश चैत्यवन्दन ॥

सीधा चल सिद्धाचले, भेटू प्रथम जिणन्द ।
द्रव्य-भाव-पूजा करू, पाउ परमानन्द ॥ १ ॥
तारक तीर्थंकर प्रभु, तीर्थराज-पद योग ।
भव भय भोग वियोग से, पाउ सुख संयोग ॥ २ ॥
सुखसागर भगवान् "हरि"-पूज्य तीर्थवर धाम ।
निजगुण साधक भाव से-प्रतिदिन करू प्रणाम ॥ ३ ॥

श्रीपुण्डरीक तीर्थेश चैत्यवन्दन ॥

चैत्री पूनम काल मे, कालविजय कर सार ।
पहेले प्रभु-आदीश्वर गणधार ॥ १ ॥

पच कोडि मुनि सगमे, आठ करमकर अन्त।
आठ परम गुण प्राप्त कर, भागे सादि अनन्त ॥ २ ॥
सुखसागर-भगवान्-"हरि"-पूज्य हुए जयकार।
उनको प्रतिदिन भावसे-वन्दू वार हजार ॥ ३ ॥

श्रीविमलाचल तीर्थेश चैत्यवन्दन ॥

नाभिनन्द ऋषभेश जिन, पूर्व—नवाणुवार।
समवसरे विमलाचले, जग जीवन हितकार ॥ १ ॥
अजित शान्ति जिनराजने—किये यहा चउमास।
नेमि विना जिन अन्य भी—प्रकटावे परकाश ॥ २ ॥
सुखसागर "हरि" पूज्य वे-विमल अचल अविकार।
देवे पद विमलाचले, वन्दू वारवार ॥ ३ ॥

श्रीसिद्धगिरि तीर्थेश चैत्यवन्दन ॥

सिद्ध गिरि सिद्ध क्षेत्र में, साधु अनन्तानन्त।
सिद्ध हुए अपुनर्भवी, आगममें विरतत ॥ १ ॥
शाश्वत सुख पावे यहां, आवे जो नरनार।
यातें शाश्वत सिद्धगिरि नाममार मसार ॥ २ ॥
सुखसागर भगवान् "हरि"-पूज्य परम आ ार।
सिद्धगिरि सेवा सदा—मेरा ठ श्रीकार ॥ ३ ॥

॥ अन्नत्थ ऊससिएण

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं मुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, ...हिं, सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं ...रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे अरिहंताणं भगवंताणं णमुक्कारेणं न ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं ...

॥ लोगस्स सूत्र ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तित्थयरे
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि ...
उसभमजिअं च वंदे, ...
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं ...
सुविहिं च पुप्फदंतं, ...
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च ...
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं ...
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं
... अभिथुआ ... पहीण
चउवीसंपि जिण ...
कित्तिय ...
जे ...

भारुग्ग बोहिलाभं, समाहि वर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥
चंदेसु निम्मलयरा, आईच्चेसु अहिय पयासयरा।
सागर वरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

॥ श्रीनवकार मंत्र ॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं।
णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं।
णमो लोए सव्व साहूणं। एसोपंच णमुक्कारो,
सव्वपाव प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं १

॥ तीर्थराज विमलगिरि स्तवन ॥

(तर्ज — बिना प्रभु पासके देखे० गजल)

विमल गिरिराज जयकारी, नमूं नित भाव अधिकारी।
महोदय सिद्धि सुखकारी, विमल गिरिराज जयकारी ॥ टेर ॥
जहां जा सिद्धियाँ पाये, अनन्ते आतमा साधक।
विमल गुण सिद्धि का साधन, विमल गिरिराज जयकारी ॥ १ ॥
जहांपर पूर्व, नवनवति, ऋषभजिन साधना करते।
पधारे पुण्यपद पाते, विमल गिरिराज जयकारी ॥ २ ॥
जहां पर पुण्डरीकादि, करमदल तोड जय पाये।
हरिगण पूज्यपददाता, विमल गिरिराज जयकारी ॥ ३ ॥

॥ सिद्धगिरि स्तवन ॥

(तर्ज—आधार मेरे प्यारे पारस प्रभु है आधार)

तीरथ है तारणहार, हार मेरे प्यारे ।
तीरथ है तारणहार ॥ टेर ॥
नामे भी सच्चा ठवणा भी सच्चा ।
सच्चा है द्रव्ये स्वीकार—कार मेरे० ती० ॥१॥
भावे भी सच्चा तीरथ ऐसे ।
सच्चा है चारों प्रकार—कार मेरे० ती० ॥२॥
हेतु हेतुमद् विचारणा में ।
चेतन के चारों आधार—धार मेरे० ती० ॥३॥
ठाणाग भाषे भव्यों को वास्ते ।
बूझे न जो है गमार—मार मेरे० ती० ॥४॥
चारों गुणानुयोगी निक्षेपा ।
वन्दे चतुर विचार—चार मेरे० ती० ॥५॥
सिद्ध गिरीश्वर सिद्धि को दाता ।
देता है सुख अपार—पार मेरे० ती० ॥६॥
यों "हरिपूज्य कवीन्द्र" सुवन्दित ।
वन्दू मैं वार हजार—जार मेरे० ती० ॥७॥



॥ सिद्धाचल तीर्थ स्तवन ॥

(तर्ज—चालो भाव धरीने जइयें आबू भेटवा रे)

(चाल— गरबाकी)

चलकर सिद्धाचल पे आज करें हम जातरा रे।
पावे आतम उज्वल सद्गुणमणि भण्डार॥
ध्यावें सिद्ध अनन्तों को हम हृदय मझार।
आवे सिद्धाचल पे आज करें हम जातरा रे॥ टेर॥
सुन्दर सोरठ देशमें, परतिख तीरथराज।
भव्यों के भवभय हरे, देवे शिवपुर राज॥
उसकी भव भय हरण निमित्त करें हम जातरा रे॥चल०१॥
रायण रूख समोसरे, पूर्वनवाणु वार।
ऋषभदेव स्वामी स्वय, पावनपद जयकार॥
हमभी पावनपद प्रकटावन जावें जातरा रे॥चल० २॥
पापी अभवी प्राणिया, अद्भुत तीरथ धाम।
भाव फरस पावे नहीं, निज आतमहित काम॥
हमतो भाव फरसना हेतु करें चल जातरा रे॥ चल० ३॥
सिद्ध अनन्तों के जहां, भरे साधना योग।
अणु परमाणु मात्र में, दायक शिवसुख भोग॥
शिवसुख साधक साधन हेतु करें हम जातरारे॥चल० ४॥
द्रव्य क्षेत्र शुद्धि जहां, काल लब्धि अनुभाव।

"हरिकवीन्द्र" कीर्तित सही, तीरथ पुण्य प्रभाव॥
चउविध शुद्धि शुभाशा धार करे हम जातरा रे ॥ चल०६॥

॥ सिद्धाचल तीर्थेश स्तवन ॥

तर्ज—चाहे तारो या न तारो (कव्वाली)

चाह बना रहूँ मैं , तीर्थेशके शरण मे।
प्राणान्त भी जो होतो, तीर्थेशके शरण मे ॥टेर॥
शत्रुजयी विमल जल — धारा, समान धारा।
होकर यहा करू मैं, तीर्थेश के शरणमें॥ चाह० ॥१॥
रायणके रूख जैसे, शुभ भाव नम्र होकर।
जीवन सफल बनाउ, तीर्थेश के शरणमें॥ चाह०॥२॥
वर सूर्यकुण्ट जैसे , गम्भीर तापहारी ।
रसपूर्ण हो रहू मैं, तीर्थेश के शरणमे ॥ चाह० ॥३॥
नद्दकके शिखरसम, हो निष्प्रकम्प योगी।
साधू स्वसाध्यको मैं, तीर्थेशके शरण मे॥ चाह० ॥४॥
उ "हरिकवीन्द्रो"—के भी अगम्यतन्मय।
सिद्धाचल स्वभावी, तीर्थेशके शरण मे ॥चाह० ॥५॥



॥ विमलगिरि तीर्थ स्तवन ॥

(तर्ज — विमलाचलवासी म्हारा वहाला सेवकने
—विसारो नहीं रे विसारो नहीं)

भवि भावे विमल गिरि तीरथ।
नमो निज शरणं लही रे, शरण लही ॥ टेर ॥
जहां वियोगी योगी रहते, सहज समाधि उपावे।
त्रिविध ताप सन्ताप मिटाकर, सिद्ध अचल पद पावे ॥
फेर भव आवे नहीं — आवें नहीं ॥ भवि० १ ॥
कुन्द कपूर इन्दु समपरिणति, शुक्ल सुध्यान विलासे।
लाल सुरंगी सिद्धातमकी, ज्योति परम प्रकाशे ॥
जहां वह तीरथ यही — तीरथ यही ॥ भवि० २ ॥
कर्मदोष मल वारण कारण, क्षेत्र प्रसिद्ध पुनीता।
अनन्त अनुपम सुन्दर जा की नित गाते गुण गीता ॥
कवीन्द्र वच हारा सही — हारा सही भवि० ॥ ३ ॥

॥ शत्रुंजय तीर्थ स्तुति ॥

शत्रुंज गिरि नमिये ऋषभदेव पुण्डरीक।
शुभ तपनी महिमा सुणि गुरु मुख निर्भीक ॥
सुध मन उपवासे विधिसु चैत्यवन्दनीक।
करियें जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥

शुद्धाशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	१६	आवेर	आवे
१४	१०	सञ्जुजुल	सुमंजुल
२८	१३	घाती	घाती
२९	७	सुख मवाजी	सुख मेवाजी
३५	१८	कुलश्या	कुलेश्या
३६	१५	और	औ
४५	१८	पनरह्व	पनरहवां
४६	४	पुनति	पुनित
६०	१३	तकूसार	कृतसार
६२	३	सविनय	सविनय

